संपादक के नोट

मैं मेरे प्रभु और उद्धारकर्ता येशु मसीह के बहुमूल्य नाम से मसीह में मेरे प्रिय पाठकों और मेरे भाइयों और बहनों का अभिवादन करती हूँ। मैं विश्वास करती हूँ तुम्हें और तुम्हारे परिवारों को आतमिक और प्राकृतिक रूप से एक अच्छी फसल मिली है।

उत्पत्ति ४१:३३ – अब फ़िरौन किसी समझदार और बुद्धिमान व्यक्ति को ढूंढ़ कर मिस्र देश का अधिकारी नियुक्त करे। बाइबल कहता हैं कि पहला बुद्धिमान और समझदार व्यक्ति यूसुफ था। उसकी छोटी उम्र से ही प्रभु यूसुफ को दर्शनों और सपनों के द्वारा आने वाले भविष्य की घटनाओं को दिखा रहा था। इतना ही नहीं, प्रभु का ज्ञान भी उसके साथ था। प्रभु की बुद्धि के कारण वह सब पापों से दूर भागता था। उसके ईश्वरीय ज्ञान के माध्यम से उसने प्रभु कि प्रतीक्षा की यह जानते हुए कि प्रभु के समय में वह उसे उठाएगा। उसने धैर्य से जेल में १३ वर्षों तक प्रतीक्षा की। जब यूसुफ जेल में था, मिस्र के शासक ने एक सपना देखा। यूसुफ के पास सपनों के अर्थ को खुलासा करने का वरदान था। यह आतमिक वरदान ने यूसुफ को जेल से राजा के महल तक लाया। यूसुफ महान ज्ञान के साथ राजा को अपने सपने के अर्थ का खुलासा किया। इतना ही नहीं, यूसुफ ने राजा को सलाह भी दी।

उसने राजा को सलाह दी कि फसल के भरपूरी के पहले सात वर्षों में अनाज को भंडारों में बचाए और अकाल के बाद के सात वर्षों में वितरण के लिए इसे रखें। तो फ़िरौन ने यूसुफ से कहा **उत्पत्ति ४१:३९ – इसलिए फ़िरौन ने यूसुफ से कहा, ष्जबकि परमेश्वर ने तुझे यह सब बातें बतला दी हैं, तेरे समान ऐसा बुद्धिमान और समझदार कोई नहीं है।** यूसुफ के दिए गए ज्ञान के कारण अकाल के समय कोई भी मिस्री भूखा नहीं गया। यूसुफ के ज्ञान के कारण वह और उसका परिवार एकत्रित हुए और वह उसके अपने भाइयों और बहनों को खिला सका।

मेरे प्रिय भाइयों और बहनों और मेरे प्रिय पाठकों, तुम्हारे जीवन में भी एक छोटी या बड़ी चीज हासिल करने के लिए तुम्हें ज्ञान की जरूरत है। **भजन संहिता १०७:४३ – बुद्धिमान कौन है? वह इन बातों पर ध्यान दे और यहोवा की करूणा पर विचार करे।** दूसरा, हम **नीतिवचन १४:१** में देखते हैं – **बुद्धिमान स्त्री अपना घर बनाती है, परन्तु मुर्ख स्त्री उसे अपने ही हाथों से**

उजाड़ देती है। अपने घर का निर्माण करने के लिए, केवल प्रभु को इसे बनाना है। **भजन संहिता १२७:१ – यदि घर को यहोवा ही न बनाए, तो बनाने वाले व्यर्थ परिश्रम करते हैं। जब तक यहोवा ही नगर की रक्षा न करे, तो पहरेदार का जागना व्यर्थ है।** एक सच्चा और एक बुद्धिमान पति और एक बुद्धिमान पत्नी प्रभु के साथ–साथ उनके परिवार का निर्माण कर सकते हैं। प्रभु का एक नाम युक्ति करनेवाला है। प्रभु के द्वारा ही है कि हमें बुद्धि, धामिर्कता, पवित्रता और मुक्ति दिया गया है।

रोमियों ११:३३ – अहा! परमेश्वर का धन, बुद्धि और ज्ञान कितने अगाध हैं! उसके विचार कैसे अथाह, और उसके मार्ग कैसे अगम्य हैं! ज्ञान की कमी के कारण कई महिलाएं अपने पति पर शक करते है और परिवारों को तोड़ देते हैं। यह महिलाएं अपने पति और सास के बीच कड़वा बीज बोते है और उनके जीवन में दु: ख का एक फसल काटते हैं। पतियां भी ज्ञान की कमी के लिए और छोटे कारणों के लिए लड़ते है और उनके परिवारों को तोड़ देते हैं। मेरे प्रिय भाइयों, अपने परिवारों को एकता में रखने के लिए तुम्हें परमेश्वर की बुद्धि और ज्ञान की जरूरत है ताकि तुम्हारे परिवारों में परमेश्वर की उपस्थिति उसका प्यार, खुशी और शांति बना रहे। **यशायाह ५२:१३ – देखो, मेरा दास उन्नत होगा, वह ऊंचा होगा और महान किया जाएगा, हां, वह अति महान होगा।**

परमेश्वर अपनी सेवा करने के लिए मूर्खों को बुलाता है और उन्हें बुद्धिमान बनाता है उसकी सेवा करने के लिए। प्रभु ने महान ज्ञान के साथ उसकी सेवा करने के लिए पतरस की तरह एक अनपढ़ मछुआरे का इस्तेमाल किया। परमेश्वर ने प्रचार करने के लिए पतरस को महान ज्ञान दे दी जिसके माध्यम से हजारों आत्माओं को बचाया गया।

मेरे प्यारे दोस्तों, परमेश्वर का दिव्य ज्ञान, परमेश्वर की युक्ति, उसके सेवकों द्वारा प्रचार किया गया वचन तुम्हारी अगुवाई करें। रोटी के तोड़ने के द्वारा, तुम प्रभु के साथ एकता में हो सकता है। जब तुम प्रभु के साथ एक है, तुम्हारे समस्या समय के दौरान परमेश्वर की आत्मा तुम्हारा नेतृत्व करेगी।

तुम्हारा प्रार्थना समय बढ़ाओं। प्रभु तुम को बुद्धिमान कर देगा। **मत्ति ११:२५ – उसी समय येशु ने कहा, ष्हे पिता, स्वर्ग और पृथ्वी के प्रभु, मैं तेरी स्तुति करता हूँ, कि तू ने ये बातें ज्ञानियों और बुद्धिमानों से छिपाकर रखीं और बच्चों पर प्रकट की हैं।**

मेरे प्रियों, अब आप रोस ऑफ शारोन चर्च का कार्यक्रम टामिलन टि.वी. चेन्नल पर हर गुरूवार श्याम ६-३० से ७-०० बजे तक देख सकते हैं। प्रभु कि स्तुति हो।
हमारा अच्छा प्रभु तुम्हें आशीष दे और तुम्हारा ध्यान रखें जब तक कि हम फिर मिले।

पास्टर सरोजा म.

प्रभु की दाख की बारी।

पवित्र शास्त्र **यशायाह ५:१** में कहता है – **अब मैं अपने अतिप्रिय के लिए उसकी दाख की बारी के विषय अपने प्रियतम का गीत गाऊंगा। मेरे अतिप्रिय की दाख की बारी एक उपजाऊ पहाड़ी पर थी।** यशायाह ने उसके दिल में प्यार के साथ दूख से यह गीत गाया। उसे इस गीत के लिए संगीत प्रभु से मिला होगा। हम पढ़ें **यशायाह ५:१–३ – अब मैं अपने अतिप्रिय के लिए उसकी दाख की बारी के विषय अपने प्रियतम का गीत गाऊंगा। मेरे अतिप्रिय की दाख की बारी एक उपजाऊ पहाड़ी पर थी। उसने चारों ओर मिट्टी को [ोदकर उसके कंकड़–पत्थरों को दूर किया, और उसमें उत्तम जाति की एक दाख लता लगाई] फिर उसके बीच में एक गुम्मट बनाया, और दाखरस के लिए एक कुण्ड भी खोदा; तब उसने अच्छे अंगूर प्राप्त करने की आशा की, परन्तु उसमें घटिया अंगूर ही मिले। हे यरूशलेम के निवासियों और यहूदा के लोगो, अब तुम ही मेरे और मेरी दाख की बारी में न्याय करो।** प्रभु ने हम में से हर एक को फल देने के लिए तैयार किया है। इस वचन के अनुसार इस्राएलियों प्रभु के अंगूर के बाग हैं। चुने हुए लोग, प्रभु के प्रिय और जिन लोगों ने प्रभु की दाख की बारी को प्राप्त किया है जैसे पवित्र शास्त्र **यशायाह ५:७** में कहता है – **सेनाओ के यहोवा की दाख की बारी तो इस्राएल का घराना है, और उसका मन भावना पौ/ाा यहूदा के लोग हैं। उसने तो न्याय की आशा की, पर देखो] रक्तपात ही देखने को मिला; धार्मिकता की आशा**

की; परन्तु देखो, चीत्कार ही सुन पड़ी। हम प्रभु की दाख की बारी हैं। प्रभु फल के लिए दाख की बारी को देखता है। तो इस्राएलियों के जीवन में फल होनी चाहिए।

हम पढ़ें **भजन संहिता १२८:३** में उस परिवार के बारे में जो प्रभु का भय मानता है – **तेरी पत्नी तेरे घर के भीतर फलवन्त दाखलता के समान, और तेरे बच्चे तेरी मेज़ के चारों ओर जैतून के पौधों के समान होंगे।** यह उन लोगों के जीवन में सच हो जाएगा जो प्रभु को डरते हैं। हम पढ़ें **भजन संहिता १२८:१–३ – क्या ही धन्य है प्रत्येक जो यहोवा का भय मानता और उसके मार्गों पर चलता है! जब तू अपने हाथों के परिक्श्रम का फल खाएगा, तू प्रसन्न रहेगा और तेरा भला होगा। तेरी पत्नी तेरे घर के भीतर फलवन्त दाखलता के समान, और तेरे बच्चे तेरी मेज़ के चारों ओर जैतून के पौधों के समान होंगे।** जो परिवार प्रभु को डरते है एक उपयोगी दाख की बारी बन जाएंगे। जब हम डरते हैं और प्रभु की आज्ञाओं को रखते है और प्रभु के प्यार में रहते हैं, फिर हम एक आशीष बन जाते हैं। जैसे वचन कहता हैं कि दाख की बारी बहुत सुंदर था और कोई कांटों या पथरीले सतह नहीं थी जैसे लिखा है **यशायाह ५:१** में – **अब मैं अपने अतिप्रिय के लिए उसकी दाख की बारी के विषय अपने प्रियतम का गीत गाऊंगा। मेरे अतिप्रिय की दाख की बारी एक उपजाऊ पहाड़ी पर थी।** जैसे वचन कहता हैं कि दाख की बारी अच्छी भूमि पर एक बहुत ही खूबसूरत जगह पर था। हम प्रभु की दाख की बारी हैं। हम वों लोग हैं जो प्रभु के लिए फल उत्पन्न करना चाहिए। प्रभु ने हमें एक खूबसूरत जगह में रखा है। यह कलीसिया हो सकता है, परिवारों या उनके चुने हुए, वह जगह एक खूबसूरत जगह बन जाता है। यह फल देने के लिए अच्छी मिट्टी की एक जगह हो जाती है और न की कांटों और पत्थरों की एक जगह। उपयोगी और खूबसूरत जगह एक आशिष कि जगह है। बहते जल की नदियां जब हमारे जीवन में आता है, तब हमारा जीवन एक आशिष का भूमि बन जाता है। जब पवित्र आत्मा हमारे जीवन में आता है तब हम एक सुंदर और खुशहाल देश बनते हैं और फल अपने आप ही निकल आएंगे। हमें पता नहीं है कि प्रभु हमारे जीवन में किस प्रकार के फल देगा। यह वरदान है जो हमें प्रभु से प्राप्त होता है जब बहते जल की नदियां हमारे जीवन में आ जाएगा।

पवित्र शास्त्र **भजन संहिता ६५:९** में कहता है – **तू भूमि की सुधि लेकर उसे सींचता है, तू उसे अत्यन्त उपजाऊ बनाता है; परमेश्वर की नदी जल से भरपूर है, इस प्रकार तू भूमि को तैयार करके उनके लिए अन्न उपजाता है।**

बहते जल की नदियों के कारण भूमि एक आशीर्वाद का भूमि बन जाता है। प्रभु बारिश, धूप और ओस पृथ्वी को जरूरत के हिसाब से देता है। धूप के बिना बारिश, भूमि की मदद नहीं करेगा, इसलिए प्रभु जो भी आवश्यकता है उचित समय पर देता है और दाख की बारी का अत्यंत ख्याल रखता है। प्रभु हमारा अच्छा ख्याल रखता है। वह पेड़ का अच्छा ख्याल रखता है ताकि वह फल दे सके। पानी के बिना पेड़ धूप में मर जाएंगे और फल उत्पन्न नहीं करेंगे। सूरज की रोशनी के साथ पानी देकर प्रभु उसे फल उत्पन्न करने के लिए तैयार करता है। जब भूमि फल लाता है, दुनिया के लोगों को आवश्यकता का चावल, गेहूं और अन्य सभी अच्छी चीज़े मिलती है। यह सब परमेश्वर की कृपा और दया के द्वारा होता है। पृथ्वी के फल के बिना आदमी क्या खाएगा? परमेश्वर की दृष्टि उसकी रचना पर हर समय रहती हैं। हम पढ़ें **भजन संहिता ६६:१२ – तू ने घुड़सवारों को हमारे सिरों पर से चलाया; हम आग और जल में से होकर निकले, फिर भी तू हमें भरपूरी के स्थान पर ले आया।** इस दुनिया में हमारे सभी परेशानियों और समस्याओं में प्रभु हमारे साथ रहा है और अंत में उसने प्रचुर मात्रा में आशीर्वाद के साथ एक भरपूरी के देश में लाया है। यही हमारा दयालु परमेश्वर है। जो कुछ भी हमारे जीवन में दर्द, दुख और समस्याएं हैं, जब हम प्रभु पर विश्वास करते है, वह हमारे जीवन में जीवित जल की नदियों का प्रवाह करता है और अंत में हमें एक आशिषित भूमि बना देता है। यह भूमि को कुछ भी कमी नहीं होगी। यहां कोई आँसू नहीं होगा परन्तु आशीष। प्रभु ने भूमि पर क्या किया? हम पढ़ें **यशायाह ५:२–उसने चारों ओर मिट्टी को [गोदकर उसके कंकड़–पत्थरों को दूर किया, और उसमें उत्तम जाति की एक दाख लता लगाई] फिर उसके बीच में एक गुम्मट बनाया, और दाखरस के लिए एक कुण्ड भी खोदा; तब उसने अच्छे अंगूर प्राप्त करने की आशा की, परन्तु उसमें घटिया अंगूर ही मिले।** प्रभु जमीन के लिए एक सीमा दीवार बनाता है। आज हमारे जीवन में सीमा क्या है? हमारे लिए प्रभु की प्रार्थना जिसका उल्लेख **यूहन्ना १७:११** में किया गया है यह हमारे जीवन में सीमा दीवार है। **अब मैं जगत में न रहूँगा। फिर भी वे जगत में रहेंगे और मैं तेरे पास आता हूँ। हे पवित्र पिता, अपने उस नाम से जो तू ने मुझे दिया है, इनकी रक्षा कर कि जैसे हम एक हैं, वे भी एक हों।** प्रभु प्रार्थना करता है दुनिया के लोग एक हो जैसे पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा एक हैं, और यह की पिता उसके नाम से उन्हें रखें। प्रभु की यह प्रार्थना हमारे जीवन में एक सीमा दीवार हो जाता है। प्रभु हमें अनाथ के रूप में नहीं छोड़ेगा, उसने ऊपर के प्रार्थना के माध्यम से हमारे लिए एक

सीमा का निर्माण किया है। जब प्रभु इस दुनिया में था, वह अपने लोगों के लिए एक सीमा था, लेकिन जब उसके जाने का समय आया, वह पिता से प्रार्थना करता है, लोगों को एक रखने के लिए जैसे वे पिता के नाम के द्वारा एक हैं। प्रभु की यह प्रार्थना हमारे जीवन में एक सीमा दीवार बन गई है। अगर हम उसकी देखभाल के तहत इस सीमा में रहते हैं, और उसके नाम में, तो हम बिना किसी रुकावट के फल उत्पन्न कर सकते हैं। कोई चोर या दुश्मन, हमारे दाख की बारी में आ नहीं सकता, क्योंकि हमारे पिता का नाम हमारे जीवन में एक सीमा हो जाता है।

हम पढ़ें **रोमियों ८:२६ – इसी रीति से आत्मा भी हमारी दुर्बलता में सहायता करता है; क्योंकि हम नहीं जानते कि हमें प्रार्थना किस प्रकार करना चाहिए, परन्तु आत्मा स्वयं भी ऐसी आहें भर भर कर जो अवर्णनीय हैं हमारे लिए विनती करता है।** आत्मा प्रार्थना करता है और हमारे लिए एक सीमा दीवार बना देता है। आत्मा की इस प्रार्थना के कारण हम धन्य हैं। हम कमज़ोर लोग हैं और फल कैसे देना है पता नहीं। हम बारिश के दौरान बीज नहीं डाल सकते हैं, और जब हम गर्मियों के दौरान बीज डालते है, भूमि फल प्राप्त नहीं कर सकती है। हम कमज़ोर हैं और उस कारण प्रभु की आत्मा हमें समझाने का प्रयत्न करता है कब बीज डालना है और कब फल में कटौती करना है, कब आशीष देने के लिए और कब आशीष प्राप्त करने के लिए। आत्मा से परिपूर्ण होकर प्रभु हमारे लिए प्रार्थना करता है और यह हमारे दाख की बारी में एक सीमा है। प्रभु का नाम और उसकी आत्मा हमारे लिए दाख की बारी का एक सीमा बन जाता हैं। बुद्धिमान सुलैमान ने जब एक दाख की बारी को देखा तो उसने क्या कहा हम पढ़ें **नीतिवचन २४:३०–३१** में – **मैं आलसी मनुष्य के खेत, अर्थात निर्बुद्धि मनुष्य की दाख की बारी के पास से होकर निकला। तो देखो] वह कंटिली झाड़ियों से भरी पड़ी है; बिच्छू–पौ/ों से ढंक गई है, और उसकी पत्थर की दिवार टूटकर गिर पड़ी है।** यह आशिष की एक दाख की बारी नहीं थी और इस दाख की बारी में कोई फल नहीं था यह कांटों से भरा हुआ था और कांटा झाड़ियों ने पूरे देश को ढांप लिया था। सीमा दीवार टूट गया था, इस से यह पता चलता है कि प्रभु की प्रार्थना और आत्मा की प्रार्थना उस भूमि के लिए नहीं था। उस देश में रहने वाले लोगों की स्थिति क्या होगी? उस भूमि में कोई फल नहीं था और कांटा झाड़ियों ने पूरे भूमि को छा लिया था क्योंकि भूमि के लिए कोई सीमा या परिसर की दीवार न थी। जब सीमा दीवार गिर गया तब कांटों के पेड़ विकसित होने लगे। हमारा जीवन भी सीमा दीवार के बिना ऐसा हो जाएगा।

प्रभु हमेशा अपने लोगों के लिए एक सीमा होगा। अगर कोई सीमा दीवार नहीं है, तो फिर हमारा जीवन, इस भूमि की तरह हो जाएगा उन कांटा झाड़ियों के साथ और हम बंधन में होंगे। सीमा दीवार के बिना पृथ्वी दिखाई नहीं देती थी जैसे पवित्र शास्त्र **नीतिवचन २४:३१** में कहता है – **तो देखो] वह कंटिली झाड़ियों से भरी पड़ी है; बिच्छू–पौ/ों से ढंक गई है, और उसकी पत्थर की दिवार टूटकर गिर पड़ी है।** परिसर की दीवार के बिना दाख की बारी की यह स्थिति थी। हम पढ़ें **नीतिवचन २४:३२ – जब मैंने यह देखा तो इस पर सोच–विचार किया, हां, मैंने देख कर शिक्षा प्राप्त की:** दाख की बारी कि स्थिति को देखने के बाद सुलैमान ने सोचना शुरू कर दिया। उसने माना कि भूमि शापित है क्योंकि सीमा दीवार गिर गया था और वह कांटों और बिच्छू–पौ/ों से भरा था और भूमि दिख नहीं रही थी। फिर वह होश में आया कि हमारे जीवन में सीमा दीवार होना चाहिए। सीमा दीवार के बिना एक व्यक्ति की स्थिति भयानक हो जाएगी। यह हमारे जीवन की स्थिति हो जाएगी जब प्रभु की आँखें और उसकी छाया हम पर नहीं हैं। यहां तक कि हमारे प्रिय लोग हमें छोड़ देंगे और चले जाएंगे। जब तक हम पश्चाताप न करें तब तक प्रभु का वादा किया वचन हमारे जीवन में पूरा नहीं होगा। हमारे जीवन में प्रभु के सभी कार्यों के लिए बाधा होगी। दाख की बारी को उपयोगी बनाने के लिए, प्रभु ने पत्थर हटा दिया, अच्छी बीज डाली और एक सीमा दीवार बना दिया। प्रभु ने फल के लिए इंतज़ार किया, पर जो आया वह कडवा फल था जैसे लिखा गया है **यशायाह ५:१–३ – अब मैं अपने अतिप्रिय के लिए उसकी दाख की बारी के विषय अपने प्रियतम का गीत गाऊंगा। मेरे अतिप्रिय की दाख की बारी एक उपजाऊ पहाड़ी पर थी। उसने चारों ओर मिट्टी को [ोदकर उसके कंकड़–पत्थरों को दूर किया, और उसमें उत्तम जाति की एक दाख लता लगाई] फिर उसके बीच में एक गुम्मट बनाया, और दाखरस के लिए एक कुण्ड भी खोदा; तब उसने अच्छे अंगूर प्राप्त करने की आशा की, परन्तु उसमें घटिया अंगूर ही मिले। हे यरूशलेम के निवासियों और यहूदा के लोगो, अब तुम ही मेरे और मेरी दाख की बारी में न्याय करो।** जब प्रभु ने दाख की बारी पर देखा वह क्या चाहता था उसे नहीं मिला। हम इस्राएली यह दाख की बारी है। यह महत्त्वपूर्ण है हमारे लिए की यह सीमा दिवार हमारे जीवन में हो वरना हम नाश हो जाएंगे। जैसे प्रभू कि आंखे हम पर है, उसी प्रकार शैतान की आंखे भी हम पर है। जिस दिन हमने प्रभु को हमारे जीवन में स्वीकार किया हम शैतान के दुष्मन बन जाते हैं। जब सुलैमान ने दाख की बारी को देखा तो उसने शिक्षा पाई और अपने होश में

आया जैसे लिखा गया है नीतिवचन २४:३२ में। हम पर प्रभु की आंखों के बिना हम इन कांटों में उलझ जाएंगे। हम पढ़ें **यिर्मयाह २:५ – यहोवा यों कहता है: श्तुम्हारे पूर्वजों ने मुझ में कौन–सा अन्याय पाया कि वे मुझ से दूर हो गए और निकम्मी वस्तुओं के पीछे चल कर स्वयं निकम्मे बन गए?** ऊपर के वचन में दु: ख के साथ प्रभु पूछता हैं क्यों लोगों ने उसे छोड़ दिया है और दुनिया के पीछे चले गए हैं। प्रभु ने एक खूबसूरत जगह में अच्छा बीज डाल दिया है और पर्याप्त पानी दिया लेकिन जो फल निकला वह कड़वा था। प्रभु से जो दूर चले गए हैं उन सभी से यह सवाल पूछ रहा है यह की क्या अधर्म उस में पाया गया था। हम पढ़ें **यिर्मयाह २:१३ – क्योंकि मेरी प्रजा ने दो बुराइयां की हैं: उन्होंने मुझे, अर्थात् जीवन–जल के सोते को त्याग दिया है और अपने लिए हौज़ बना लिए हैं, टूटे हौज़, जिनमें जल टिक नहीं सकता।** जैसे ऊपर का वचन कहता हैं हम बहते जल से भाग रहे हैं और हमारे बर्तन टूट हुए हैं जो पानी को रोक नहीं सकता। हम कोई भी आशीष देखने के लिए सक्षम नहीं होंगे, क्योंकि सारा पानी जमीन पर बाहर गिर जाएगा। प्रभु दुख के साथ ऊपर दिए गए शब्द बोलता है। जब हम पवित्र आत्मा से, परमेश्वर के वचन से और प्रभु के उपहारों से दूर जाते है, फिर हम जीवित जल से दूर जा रहे हैं। हमें प्रभु को क्या देना चाहिए? यह पहली चीज़ हमें अपने जीवन में पता होना चाहिए। प्रभु कहता है कि उसने दाख की बारी को बना दिया है बीज डाल दिया, और सीमा दीवार बना दिया और अच्छे फल के लिए प्रतीक्षा की। प्रभु ने हमें चुना हैं हमें आशीर्वाद दिया हैं और हमें उसकी बुद्धि और ज्ञान दिया है और सब कुछ प्रभु का है। जब समय आता है, प्रभु हमारे जीवन में क्या देखता हैं, एक कड़वा फल। प्रभु कहता है कि उसके लोग जीवित जल से दूर चले गए हैं और उनके बर्तन टूट हुए हैं कि उस में पानी रह न सके। उस में कोई लाभ या फल नहीं है। हम बर्तन भर सकते हैं, लेकिन हमारे जीवन में कोई आशीष नहीं होगी। क्या हमारे जीवन में जरूरत है की जीवित जल की नदियां हमारे जीवन में प्रवाह करनी चाहिए। तब प्रवाह कि बहते जल के कारण आशीष पर आशीष हो जाएगी। यह हमारा शक्तिमान परमेश्वर है। आज हम यह समझे, अगर हमारे पास प्रभु की सीमा नहीं है तो हमारा जीवन नष्ट हो जाएगा। यह महत्वपूर्ण है कि प्रभु की सीमा में हमारा जीवन होना चाहिए।

हम पढ़ें **श्रेष्ठगीत ७:१०–१३** में फल तैयार होने के बाद कैसे प्रभु को आमंत्रण दिया जाता है – **मैं अपने प्रियतम की हूं, वह मेरी लालसा करता रहता है। मेरे प्रियतम आ, हम खेतों में निकल चलें, आ, गांव में अपनी रात व्यतीत**

करें। हम तड़के उठकर, दाख की बारियों में चलें, देखें, दाखों में फूल लगे हैं या नहीं, उनकी कलियां खिली हैं या नहीं। अनार फूले हैं या नहीं, वहीं मैं तुझे अपना प्यार दूंगी। दोदाफलों की सुगन्ध फैल चुकी है, हमारे द्वारों पर नए और पुराने उत्तम उत्तम फल लगे हैं। मेरे प्रियतम, मैंने उनको तेरे लिए बचा रखे हैं। प्रभु के लिए तैयार की गई आशीष के फलों के साथ औरत अपने दाख की बारी में प्रभु को आमंत्रित करती है। प्यार के साथ वह प्रभु के लिए प्रतीक्षा करती है।

जैसे यशायाह की पुस्तक में उल्लेख किया गया है, कैसे प्रभु ने दाख की बारी को तैयार किया, फल उत्पन्न करने के लिए, अच्छा बीज डालकर और परिसर के दीवार का निर्माण करने के बाद, उसी तरह से प्रभु **यूहन्ना १५:१६** में कहता है – **तुमने मुझे नहीं चुना, परन्तु मैंने तुम्हें चुना और नियुक्त किया, कि तुम फल लाओ और तुम्हारा फल बना रहे, कि तुम मेरे नाम से जो कुछ पिता से माँगो, वह तुम्हें दे।** प्रभु ने हमें चुना हैं, हमारे लिए प्रार्थना किया है और हमारे जीवन में एक सीमा दीवार बना दिया है। उसके नाम से हमें फल उत्पन्न करना चाहिए। प्रभु ने हमें तैयार किया है की हमारा फल बना रहे। प्रभु ने क्रूस पर अपनी जान देकर यह किया है, हमारे खातिर। प्रभु ने हमारे लिए अपनी जान दी। अगर हम पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर जीवन जीते है तब हम फल उत्पन्न कर सकते है। यह प्रभु है जिसने दाख कि बारी की रचना की है, सीमा दिवार और बीज डाली है। हमने कुछ भी नहीं किया हैं। उसने हमें चुना है। हमने प्रभु को क्या दिया है कि वह हमारे लिए उसकी जान दे? कुछ नहीं। प्रभु ने हमें सब कुछ दिया है। यह महत्त्वपूर्ण है कि हम फल दें।

हम पढ़ें **यशायाह ४३:७ – अर्थात् हर एक को जो मेरे नाम का कहलाता है, जिसको मैंने अपनी महिमा के लिए सृजा है, तथा जिसको मैंने रचा और बनाया है।** यहा प्रभु उनको बुलाता है जो उसके नाम द्वारा बुलाए गए है और जो उसकी महिमा के लिए बनाए गए हैं।

हम पढ़ें **यशायाह ४३:२१ – जिस प्रजा को मैंने अपने लिए बनाया है, वह मेरा गुणानुवाद करेगी।** प्रभु हमेशा उसकी महिमा और कार्य के लिए लोगों को तैयार करता है। हमें उसकी आज्ञाओं को रखना है, फल उत्पन्न करना है हमारे दशमांश और भेंट को देना है, तब प्रभु तुम्हारी प्रार्थनाओं को सुनेगा। प्रभु उसकी महिमा के लिए लोगों को तैयार करता है और वे उसका काम करने के लिए तैयार होना चाहिए। प्रभु उनकी प्रार्थना सुन लेगा। हम यह नहीं कह सकते की हम सब कुछ कर सकते है। प्रभु की आँखों में हमें एक

अच्छा जीवन जीना है और सच्चाई में रहना हैं, तब हम अपने जीवन में फल दे सकते हैं। हम बाइबल में पढ़तें हैं कैसे प्रभु सदोम और अमोरा को नष्ट करने के लिए आया था। अब्राहम ने प्रभु से विनती की, कि उस देश को क्षमा करे अगर वहा पर पचास धर्मी लोग होंगे। प्रभु सहमत हुआ। तब अब्राहम समझ गया कि पचास धर्मी लोग भी वहाँ नहीं थे। एक बार फिर अब्राहम ने प्रभु से विनती की, कि उस देश को क्षमा करे अगर वहा पर दस धर्मी लोग होंगे। प्रभु ने उत्तर दिया कि दस लोगों के खातिर वह उस देश को नाश नहीं करेगा। अब्राहम ने माना और समझा कि उस देश में दस धर्मी लोग नहीं थे। अंत में प्रभु ने आग से सदोम और अमोरा के देश को नष्ट कर दिया। इसलिए अच्छे लोग कौन हैं? यह वें हैं जो प्रभु को ड़रते है, चूने हुए, जो लोग प्रभु कि सीमा में हैं, जो उसकी आज्ञाओं का पालन करते है, और जो प्रभु को उनकी भेंट देते हैं। वे जो प्रभु को सभी मामलों में पहले रखते है वे प्रभु की दृष्टि में अच्छे लोग बन जाते हैं और प्रभु उनकी प्रार्थना को सुनेगा। लूत एक अच्छा आदमी था, लेकिन उसने उस देश में दस अच्छे लोगों को तैयार नहीं किया था। यही कारण था कि सदोम और अमोरा का देश नष्ट हो गया।

बार–बार मैं तुम्हें बताती हूँ कि प्रभु हमें यह जीवित वचन देता है ताकि हम और हमारे परिवार बच जाए। यह एक अच्छा जीवन व्यतीत करने के लिए हमें प्रोत्साहित करेगा। लेकिन हम कभी उसकी आज्ञाओं को नहीं रखते हैं, हम उन्हें स्वतंत्रता से तोड़ते हैं। वचन कहता हैं कि जो परिवार प्रभु का भय मानता है वह एक फलदायक देश बन जाएगा। तो हमारे घरों में फलों के द्वारा हमें प्रभु का डर कितना है पता चल जाएगा। आज हम अपने परिवारों को परखें। हम देखें हमारे परिवारों और दाख की बारी में कितना आशीष है। प्रभु ने हमें कितना आशीष दिया है? हमें अपने घरों में खुशी या दुख है, हम अपने आप को जांच करें। तो फिर हम आनन्द से कह सकते हैं कि प्रभु ने मेरी प्रार्थना सुनी है, नहीं तो हम नहीं कह सकते हैं। प्रभु की आँखों में हम अच्छे लोग बनना चाहिए। तब प्रभु कहेगा कि हमने उसे चुना नहीं है लेकिन उसने हमें चुना है। जब हम डरते है और उसकी आज्ञाओं के अनुसार चलते हैं, उस समय वह हमें चुन लेगा। तो फिर हम देने वालों के रूप में आशीष पाएंगे, नहीं तो हमारे जीवन में कुछ भी नहीं बल्कि कठिनाई होंगी। व्यवस्थाविवरण २८ का पुस्तक प्रभु के कितने सारे आशीषों के बारे में बताता है। आशीषें जब तुम बाहर जाते है और अंदर आते है, तुम्हारे हाथों के काम में आशीष, आशीषें जब तुम लेते और देते हैं। हम पढ़ें **व्यवस्थाविवरण २८:१** और आशीषों के लिए क्या कारण है समझे? – **श्यदि तू ध्यान से अपने**

परमेश्वर यहोवा की सुने, तथा उसकी जो आज्ञाएं आज मैं तुझे सुना रहा हूँ उन सबका पालन करने की चौकसी करे तो तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे पृथ्वी की समस्त जातियों से अधिक उन्नत करेगा। जब हम सच्चाई से परमेश्वर की आवाज को सुनते हैं तब यह सभी आशीषें हमारे परिवार में आ जाएगी। ये केवल एक या दो आशीषें नहीं हैं बल्कि प्रभु से बहुत, बहुत सारी आशीषें है। हम पढ़ें **व्यवस्थाविवरण २८:१५ – यदि तू अपने परमेश्वर यहोवा की न सुने और जिन नियमों और विधियों की आज्ञा मैं आज तुझे दे रहा हूँ उन सब को मानने में चौकसी न करे तो ये सब शाप तुझ पर आ पड़ेंगे।**
जैसे उपर का वचन कहता है कि शाप हम पर हावी हो जाएँगे। यह सुलैमान ने देखी दाख की बारी के समान है, एक परिसर की दीवार के बिना, जहां कांटों और बिच्छूओं ने भूमि को छा लिया था और भूमि दिखाई नहीं देती थी। जब शाप हम पर हावी होते है, तब हमारे जीवन भर हम बंधन में रहते हैं। उस से बाहर आने के लिए कोई रास्ता नहीं होगा। हम ऐसी स्थिति के लिए जो प्रभु हमारे जीवन में लाएगा किसी को दोष देने में सक्षम नहीं होंगे। यह इसलिए होता है क्योंकि दाख की बारी में कोई सीमा नहीं है। हम अपने तरीके के अनुसार परमेश्वर का वचन नहीं बदल सकते है। हम पढ़ें **मत्ति ३:८ – इसलिए अपने पश्चात्ताप के योग्य फल भी लाओ;** हमारे जीवन में फल क्या है? हमारे जीवन में पश्चाताप होना चाहिए। अब तक अगर हम उसकी आज्ञाओं का पालन और प्रभु को फल नहीं दिया है, तो आज हमें प्रभु को पश्चाताप का फल देना है। जब पश्चाताप का यह फल हमारे जीवन में आता है तो हम प्रभु से आशीष प्राप्त कर सकते हैं। यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला ने फरीसियों को डांटा जिसका उल्लेख **मत्ति ३:७** में है – **परन्तु जब उसने बहुत से फरीसियों और सदूकियों को बपतिस्मा लेने के लिए आते देखा तो उनसे कहा, श्हे सांप के बच्चो, तुम्हें किसने सचेत कर दिया कि आने वाले प्रकोप से भागो?** इन लोगों के मन में परमेश्वर की आज्ञा नहीं था, वें प्रभु के साथ किसी भी प्रकार के लेन देन में नहीं थे। यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला ने उन्हें शैतान के बच्चें बुलाया। उसने उन्हें बताया कि उनके जीवन में पश्चाताप का फल देखा जाना चाहिए। यह प्रभु आज हमारे जीवन में चाहता है। प्रभु हमारे बाहरी रूप को देखता नहीं है कि हम अच्छे लोग और उसके लोग हैं। प्रभु हमारे जीवन में फल चाहता है। एक विशेष जगह में प्रभु ने एक अंजीर के पेड़ को देखा जो ऐसे दिखता था कि उसमें फल हो। जब प्रभु पेड़ के पास गया तो उस पर कोई फल नहीं था। प्रभु ने पेड़ को शाप दिया और पेड़ सूख गया। हम पढ़ेगे उस पेड़ को क्या हुआ **मत्ति २१:१९** में – **तो वह मार्ग**

के किनारे एक अंजीर के पेड़ को देखकर उसके पास गया, परन्तु उस पर पत्तों को छोड़ कुछ नहीं पाया। तब उसने उस से कहा, ३अब से तुझ में कभी फल नहीं लगेंगे।३ अंजीर का पेड़ उसी क्षण सूख गया। प्रभु ने केवल एक शब्द कि बात की और तुरंत अंजीर का पेड़ सूख गया। क्या हम प्रभु को सवाल कर सकते है? उस पल से परिसर का दीवार हटा दिया गया था। परमेश्वर के प्रेम को उस पेड़ की ओर से हटा दिया गया।

हम पढ़ें **मत्ति ३:१० – कुल्हाड़ा अब भी पेड़ों की जड़ पर रखा हुआ है, और प्रत्येक पेड़ जो अच्छा फल नहीं लाता, काटा और आग में झोंका जाता है।** यहां तक कि अब कुल्हाड़ी पेड़ की जड़ में रखा है। वें पेड़ जो अच्छा फल नहीं देते हैं, काटा और आग में डाल दिया जाएगा। हमें पता होना चाहिए कि हमारा परमेश्वर एक प्यारा परमेश्वर है जो आश्चर्य और चमत्कार करता है। हमें प्रभु को फल देना है क्योंकि उसकी आँखें हम पर हैं। यह वही है जिसने दाख की बारी को बनाया है, आशीष दिया, पानी दिया, और जो भी आवश्यकता थी। तब प्रभु ने प्रतीक्षा की यह देखने के लिए की हमने प्रभु को क्या दिया है। यह कारण से यशायाह दुखी होकर गीत गाता है जैसे लिखा गया है **यशायाह ५:१–३** में – **अब मैं अपने अतिप्रिय के लिए उसकी दाख की बारी के विषय अपने प्रियतम का गीत गाऊंगा। मेरे अतिप्रिय की दाख की बारी एक उपजाऊ पहाड़ी पर थी। उसने चारों ओर मिट्टी को खोदकर उसके कंकड़–पत्थरों को दूर किया, और उसमें उत्तम जाति की एक दाख लता लगाई, फिर उसके बीच में एक गुम्मट बनाया, और दाखरस के लिए एक कुण्ड भी खोदा; तब उसने अच्छे अंगूर प्राप्त करने की आशा की, परन्तु उसमें घटिया अंगूर ही मिले। हे यरूशलेम के निवासियों और यहूदा के लोगो, अब तुम ही मेरे और मेरी दाख की बारी में न्याय करो।**

हम पढ़ें **यूहन्ना १५:८ – मेरे पिता की महिमा इसी से होती है कि तुम बहुत फल लाओ, तभी तो तुम मेरे चेले हो।** अगर हम फल देते हैं तो पिता का नाम महिमा हो जाएगा और हम उसके चुने हुए लोग हो जाएंगे। तो हमारी इच्छा क्या होनी चाहिए? हमें फल देना चाहिए ताकि पिता के नाम की महिमा हो। पिता के नाम की महिमा, ना कि तुम्हारा नाम या मेरे नाम की महिमा। जब प्रभु एक आशीष देता है और पिता के नाम की महिमा होती है तब यह हमारे जीवन में आनन्द लाता है। ज़मीन, पानी और बीज देने के बाद पिता फल प्राप्त करने पर खुश हो जाएगा।

जब प्रभु ने आदमी को बनाया तब वह किसी के भी नियम के तहत नहीं था और एदेन की बारी में स्वतंत्र था। वे एक जेल के जैसे जंजीरों मे बंधे हुए

नहीं थे बल्कि स्वतंत्र थे। वे बगीचे के चारों ओर घूमेंने के लिए स्वतंत्र थे। प्रभु ने उन्हें आज्ञाकारिता के लिए एक आज्ञा दी थी, लेकिन वे असफल हुए। आज भी हर व्यक्ति को फल देना है, ताकि पिता के नाम की महिमा हो जाए।

राजा शाऊल एक अच्छा आदमी था उस समय तक जब तक पवित्र आत्मा उसके जीवन में था। पवित्र आत्मा शाऊल पर से निकला, तो एक दुष्ट आत्मा उस पर आ गया। जब तक हम उसकी आँखों के नीचे हैं और उसकी आत्मा हमारे साथ है, हम एक आशीष का पात्र बन सकते हैं। शाऊल के जीवन में दुष्ट आत्मा ने उसे नाश कर दिया।

हम देखेंगे एक घटना शमौन पतरस के जीवन में। हम पढ़ें **मत्ति १६:१६–१७ – शमौन पतरस ने उत्तर दिया, ‘तू जीवित परमेश्वर का पुत्र मसीह है।’ येशु ने उस से कहा, ‘हे शमौन, योना के पुत्र, तू धन्य है, क्योंकि मांस और लहू ने इसे तुझ पर प्रकट नहीं किया, परन्तु मेरे पिता ने जो स्वर्ग में है।** यहाँ पतरस पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गया और येशु मसीह जीवित परमेश्वर का पुत्र है कबूल किया। इस पर प्रभु येशु ने स्वर्ग में पिता की महिमा की। जब हम आत्मा से भरे होते हैं तब हमारे सभी कार्यों में महिमा स्वर्ग में पिता को जाता है। वही पतरस एक सांसारिक तरह से सोचना शुरू कर दिया, यह सोच कर कि यदि प्रभु पकड़ा जाएगा और मर जाता हैं, फिर उनका क्या होगा। प्रभु को इन समस्याओं का सामना करने से रोकने के लिए वह पर्वत कि चोटी पर प्रभु के लिए एक तम्बू बनाना चाहता था। प्रभु ने पतरस को डांटा और उसे शैतान बुलाया जिसका उल्लेख **मत्ति १६:२१–२३** में है – **उस समय से येशु मसीह अपने चेलों को बताने लगा कि अवश्य है कि मैं यरूशलेम को जाऊं और प्राचीनों, मुख्य याजकों और शास्त्रियों द्वारा बहुत दुख उठाऊं और मार डाला जाऊं और तीसरे दिन जिलाया जाऊं। इस पर पतरस उसे अलग ले गया और यह कहते हुए झिड़कने लगा: ‘हे प्रभु, परमेश्वर न करे! तुझ पर ऐसा कभी न होने पाए!’ तब उसने मुड़कर पतरस से कहा, ‘हे शैतान, मुझ से दूर हो! तू मेरे लिए ठोकर का कारण है, क्योंकि तू परमेश्वर की बातों पर नहीं, परन्तु मनुष्य की बातों पर मन लगाता है।’** एक मानवीय तरीके से हमारे जीवन में दुख और समस्याओं का सामना करने के लिए हमारे दिल में डर और दुख होता है। हम परिस्थितियों को डरते है और हमारे जीवन का क्या होगा जानते नहीं है। पतरस नहीं चाहता था की प्रभु पीड़ा, मृत्यु और पुनरूत्थान का सामना करे, और वह प्रभु को एक तरफ ले गया और उसे ऐसे कहा। अगर यह प्रभु येशु के जीवन में सच हुआ होता,

तो आज हम उसके नाम में यह नया जीवन प्राप्त नहीं करते। वे सब शैतान के शब्द थे। प्रभु, सारे संसार के लिए उसका जीवन देने के लिए जा रहा था, हमारे पापों से हमें शुद्ध करने के लिए। वह कलवारी के क्रूस पर हमें जीत देने के लिए जा रहा था। शैतान इस के खिलाफ था और पतरस के माध्यम से प्रभु को रोकने की कोशिश की। प्रभु ने इसे समझा और तुरंत पतरस को डांटा। उसने पिता की इच्छा को याद किया जो उसे इस दुनिया में पूरा करना था। उसे पूरी दुनिया के पापों को लेने के लिए क्रूस पर जाना पड़ा। अगर वह क्रूस पर नहीं जाता, तो आज हमें अपने जीवन में जीत नहीं मिलती और हमारे दाख की बारी में कोई सीमा दीवार नहीं होती। प्रभु ने क्रूस पर अपना जीवन दे दिया और हम सभी के लिए एक सीमा दीवार बना दिया। प्रभु हमारे साथ रहने के लिए और हमें हर समय मार्गदर्शन करने के लिए एक आत्मा बन गया, वरना हम अंधे हो गए होते। आज, हमें कौन बचाता? इसराइल और मुंबई, में कितनी दूरी हैं। पर क्योंकि प्रभु क्रूस पर गया, हमें एक नया जीवन मिला है। प्रभु को तुम्हारे लिए गवाही देने दो। बाइबिल **मत्ति १६:२४–२५** में कहता हैं – **तब येशु ने अपने चेलों से कहा, श्यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप का इनकार करे और अपना क्रूस उठाकर मेरे पीछे चले। क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे वह उसे खोएगा, परन्तु जो काई मेरे लिए अपना प्राण खोएगा, वह उसे पाएगा।** प्रभु की खातिर जब हम दाएं या बाएं नहीं देखते है, जब हम क्रूस लेते हैं दुख और कठिनाइयों का सामना करते है, और उस पर हमारा विश्वास रखते है और दृढ़तापूर्वक बने रहते है, तो निश्चित रूप से एक दिन हमें इस जीवन में जीवन मिल जाएगा। अगर हम दुनिया के रास्ते के अनुसार जीने की कोशिश करते हैं, और आज के लिए खुद की देखभाल करने की कोशिश करते हैं, हमारे बच्चों के कल के लिए बचाते हैं, फिर हम अपना जीवन खो देंगे। हमारे जीवन के लिए कोई गारंटी नहीं है। १,४४,००० लोगों के माथे पर पिता का नाम था। अगर पिता का नाम हमारे माथे पर होना चाहिए, फिर हमें क्रूस हर दिन उठाकर प्रभु के पीछे चलना चाहिए। ये सबकुछ आसान नहीं है। अगर हम इस तरह से चलते हैं तो हम प्रभु के लिए जीना सीख जाएंगे। वचन का उल्लेख जैसे मत्ति १६:२४–२५ में है सच है। जब हम प्रभु को अपने जीवन में पहली जगह नहीं देते तो हम अपना जीवन एक दिन खो देंगे। अगर हम प्रभु को पहली जगह देते हैं, और अगर हमारा परिवार प्रभु की सीमा के भीतर है, फिर हमारे दाख की बारी में ज़्यादा फल होंगे। फल

अधिक हो जाएगा इतना कि हम दूसरों को दे सकते हैं। प्रभु हमारे जीवन में ऐसा कर सकता हैं।

प्रभु एक व्यक्ति के बारे में गवाही देता है **यूहन्ना १:४७** में – **येशु ने नतनएल को अपनी ओर आते देख कर उसके विषय में कहा, ‘देखो, वास्तव में एक इस्राएली जिसमें कोई कपट नहीं!’** वह खेत जैसे वचन में देखा गया है इस्राएलियाँ हैं, जैसे लिखा गया है **यशायाह ५:७** में – **सेनाओ के यहोवा की दाख की बारी तो इस्राएल का घराना है, और उसका मन भावना पौधा यहूदा के लोग हैं। उसने तो न्याय की आशा की, पर देखो, रक्तपात ही देखने को मिला; धार्मिकता की आशा की; परन्तु देखो, चीत्कार ही सुन पड़ी।** नतनएल चालाक नहीं था और उसके जीवन में प्रभु को पहला स्थान दिया होगा। प्रभु ने इस आदमी के बारे में अच्छा देखा। यह प्रभु हमारे बारे में गवाही देना चाहिए। प्रभु हमारे भीतर उसकी आज्ञाओं को देखना चाहिए। तब वह हमसे कहेगा कि हम उसकी दाख की बारी हैं और बहुत फल हैं। हम देंगे और लेंगे नहीं, हम सिर होंगे और पूंछ नहीं, और हम मानो उकाब पक्षी की तरह उड़ जाएंगे। ओह! इतने सारे आशीषें हैं, अगर हम जाएंगे, हम प्रभु के आशीषों की गिनती नहीं कर सकते।

पास्टर सरोजा म.